ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

वैश्वीकरण : महिला शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, विकास, एवं चुनौतियां

विजय सर्राफ
व्याख्याता ,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय पी.जी. कॉलेज,
झालावाड़, राजस्थान

सारांश

पं. जवाहर लाल नेहरू ने का था, यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः हो जायेगा।

मुख्य शब्द : विकासात्मक, शैक्षणिक, स्वावलंबन, स्वनिर्मितः उपलब्धि।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही सरकार द्वारा महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और विकासात्मक स्थितियों में सुधार लाने के लिये एवं उन्हें विकास की मुख्य धारा में समाहित करने के लिये अनेक कल्याणकारी योजनाओं एवं विकास के कार्यक्रमों का संचालन किया गया है। उनकी शिक्षा के समुचित अवसर उपलब्ध करवा के उन्हें अपने अधिकारों एवं दायित्वों के प्रति सजग करते हुये उनकी सोच में परिवर्तन एवं आर्थिक स्वावलंबन हेतू पिछले कुछ दशकों से विशेष प्रयास किये गये है।

इस प्रयास के सकारात्मक परिणाम भी आये है। महिलाओं ने शैक्षिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक,खेलकूद आदि विविध क्षेत्रों मे उपलब्धियों के नये आयाम हासिल किये है। आज महिलायें आत्मनिर्भर, स्वनिर्मित, आत्म–विश्वासी है जिसने पुरूष प्रधान चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी अपनी योग्यता के स्तम खडे किये है राजनेतिक सामाजिक वेज्ञानिक आर्थिक अनेक क्षेत्रों में सफल महिलाओं की एक लम्बी फेहररिस्त है।

वैश्वीकरण के इस दौर में समाज में महिला और पुरूष के मध्य संबंधों में बरावरी के व्यवहार की मानसिकता उभरकर आयी है। पुरूषों ने भी इसे सहर्ष स्वीकार किया है और सहयोगी रवैया अपनाया है। अंतरिक्ष में जाने की बात हो या बहुराट्रीय कम्पनियों मे, खेलका मैदान हो या युद्व का आकाश मे उड़ान भरनी हो, या समुद यात्रा, महिलाओं कही भी पीछे नही है। घर की जिम्मेदारियों को निभाते हुये भी उन्होने बाहर आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में सफलता हासिल की है। आज महिला पुरूष की प्रतिद्वन्दी नही, बल्कि सहयोगिनी है।

निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने के बावजूद आज भी नारियों को समाज में अनकानेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों मे प्रथमवः उसे केवल परिवार में ही नही, बाहर भी पुरूष की प्रतिद्वन्दिता का शिकार होना पड़ता है , क्योकि हमारा समाज पुरूष प्रधानता की मानसिकता से उबर नही पाया है।

इसी मानसिकता के चलते अपराधीकरण में वृद्वि हुई है, महिलाओं की असुरक्षा एंव महिला उत्पीड़न एंव घरेलू हिंसा के मामलों में वृद्वि हुई है। घर के बाहर महिलाओं पर पैनी दृष्टि रखनी जाती है। जिससे वे स्वाभाविक रूप से नही रह पाती।

मानवीय द्वर्बलता के चलने यह भी उभरकर आया है कि प्रतिस्पर्धा के दोर मे नारी ही नारी की सबसे बड़ी दुश्मन है। अधिकांश मामलों में घरेलू हिंसा नारी से शुरू होती है। और नारी पर खत्म होती है। यद्यपि विभिन्न विपरीत परिस्थितियों के बावजूद महिलाये आगे आयी है, आत्मनिर्भर भी हुई है और उनकी इस आर्थिक आत्मनिर्भर ने उनमे जबरदस्त आत्मविश्वास का संचार किया हैं। वे घरेलू मोंर्चे एंव बाहरी क्षेत्र दोनो में ही सफलतापूर्वक अपना दायित्व निभा रही है। इस संदर्भ में युगनायक एंव शब्द निर्माता स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनिय है– '' किसी भी शब्द की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहा की महिलाओं की स्थिति। हमे नारियो को ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिये, जहां वे अपनी समस्याओं को अपने ढ़ंग से स्वंय सुलझा सके। हमे नारी शक्ति के उद्धारक नही, बरन उनके सेवक और सहायक बनना चाहिये। भारतीय नारियां संसार की अन्य किन्ही भी नारियों की भांति अपनी समस्याओं को

सुलझाने की क्षमता रखती है। आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनायें सम्मिहित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'मानव अधिकार और भारतीय संविधान 'प्रदीप त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
2. महिलाओं के कानूनी अधिकार ' एन. के. जैन, राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग, जयपुर 2007
3. 6 नई सदी में महिला सशक्तिकरण के अभिनव प्रयास : डा. उमेशचन्द अग्रवाल प्रतियोगिता दर्पण, जनवरी 2008
4. 'संयुक्त राष्ट्र संध' एम. के. सिंह, आशुतोष कुमार, कल्पना पब्लिकेशन, नई दिल्ली